क्लास M.A. SEM-II शिक्षक-रवि शंकर राय

विषय-macro economics दिनांक 10-07-2020,समय-2:10 PM

Supply-side Economics

1970 के दशक तथा 1980 के दशक के पूर्वार्ध में USA तथा ग्रेट ब्रिटेन में स्थैतिक-स्फीति(stagflation) की समस्या ने कैंज्वादी मांग प्रबंधन नीतियों के माध्यम से सरल समाधान के रूप में स्वीकार नहीं किया गया जबकि ऊँची मुद्रा स्फीति तथा ऊँची बेरोजगारी दोनों ही एक साथ पायी जाती थी| वस्तुतः कैंज्वादी मांग प्रबंध के माध्यम से stagflation के उपचार करने के प्रयासों ने स्थिति को और खराब कर दिया|

इस पृष्ठभूमि में समष्टिपरक आर्थिक विचारको की एक वैकैल्पिक विचारधारा प्रस्तुत किया जो समग्र मांग पक्ष के जगह पर समग्र पूर्ति पक्ष पर जोड़ दिया|

Supply-side Economics का मूल्य कथन निम्नलिखित है-

1. करारोपण तथा श्रम की पूर्ति-

   कर की सीमान्त दर में कटौती श्रम की पूर्ति या कार्य के घंटो में वृद्धि करेगी क्योकि यह करारोपण के बाद श्रम के पुरुष्कार में वृद्धि कर देती है| उनके अनुसार कुछ सीमा के पश्चात् अपेक्षाकृत अधिक कर की सीमान्त दर लोगो की कार्य करने की इक्छा को कम कर देती है और इस लिए बाजार में श्रम की पूर्ति कम कर देती है|

Ravi Shankar Ray

उनका तर्क है कि एक व्यक्ति कितने समय तक काम करेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि अतरिक्त कार्य के घंटो से उसे कितनी कर-पश्चात् अतरिक्त आय अर्जित कर जायेगी| कर की अपेक्षाकृत कम सीमान्त दरे अतरिक्त श्रम की कर-पश्चात् आय में वृद्धि करेके लोगो के अपेक्षाकृत अधिक घंटे कार्य करने केलिए प्रेरित करेगी| कर के सीमान्त दर में कमी के परिणामस्वरूप कर पश्चात् आय में वृद्धि अवकाश के अवसर लागत में वृद्धि कर देती है तथा **का प्रतिस्थापन काम द्वारा करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। इसके परिणामस्वरूप श्रम के समग्र पूर्ति में वृद्धि हो जाती है इसके अतिरिक्त कार्य से अधिक पुरस्कार सनिश्चित करने के द्वारा कर के अपेक्षाकृत कम सीमान्त दरे अधिक लोगो लो श्रम शक्ति में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करता है| यह भी बाजार में श्रम की समस्त पूर्ति को वृद्धि करती है**

इस प्रकार कर के सीमान्त दर में कमी के परिणाम स्वरुप प्रतिदिन या प्रति सप्ताह अधिक घंटे काम करने, अधिक लोगो को श्रम शक्ति में सम्मिलित होने को प्रोत्साहित करने, श्रमिको को अपने अवकाश प्राप्ति के समय को सथागित करने की प्रेरणा प्रदान करने तथा श्रमिक को लम्बे अवधि तक बेरोजगार रहने को हतोस्त्साहित करने के द्वारा अनेक रूपो में श्रम की पूर्ति में वृद्धि हो सकती है|

2. बचत तथा विनियोग की प्ररणाएं (Incentives to Save and Invest)

सीमान्त दरों में कमी बचत करने तथा अधिक विनियोग की प्रेरणा में वृद्धि करेगी| इसके अनुसार आय पर कर की ऊँची सीमान्त दरें बचत तथा विनियोग पर करोत्तर प्रतिफल को कम देती हैं और इसलिए बचत तथा विनियोग को हतोत्साहित करती हैं। माना कि एक व्यक्ति ब्याज दर 10 प्रतिशत वार्षिक होने पर 1000 रु. बचत करता है तो वह प्रतिवर्ष ब्याज के रूप में 100 रु. प्राप्त करेगा। यदि कर की सीमान्त60 प्रतिशत है तो उसकी ब्याज के रूप में करोत्तर

Ravi Shankar Ray

आय 40 रु. होगी। इसका अर्थ यह है कि इसकी बचत पर करोत्तर ब्याज कम होकर 4 प्रतिशत (10 x 100 = 4) हो गयी है।

इस प्रकार जबकि एक व्यक्ति अपनी बचत पर 10 प्रतिशत प्रतिफल की दर होने पर बचत करने के लिए इच्छुक हो सकता है किंतु जब उसे केवल 4 प्रतिशत प्रतिफल प्राप्त होता है तो वह बचत करने के बजाय अधिक उपभोग कर सकता है। यह ध्यान देने योग्य है कि विनियोग तथा पूँजी संचय में वृद्धि करने के लिए बचतें आवश्यक होती हैं जो दीर्घकाल में उत्पादन में वृद्धि को निर्धारित करती हैं। पूर्ति-पक्षीय अर्थशास्त्री बचतों को प्रोत्साहित करने के लिए आय पर कर की अपेक्षाकृत कम दरों पर जोर देते हैं। वे व्यवसायियों तथा फर्मों को अधिक विनियोग करने के लिए प्रेरित करने के लिए विशेष रूप से विनियोग से आय, जैसे व्यावसायिक लाभ पर कर की कम सीमान्त दरों का भी तर्क देते हैं।

3. कर प्रेरित लागत में वृद्धि करने के प्रभाव (cost-pushed effect of the tax wedge)

पूर्ति-पक्ष अर्थशास्त्र के अनुसार आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में सार्वजनिक क्षेत्र के अत्यधिक वृद्धि ने अपनी गतिविधियों की वित् व्यवस्था के लिए सार्वजनिक आय में अधिक वृद्धि को आवश्यक कर दिया है। कर आय में निरपेक्ष तथा राष्ट्रिय आय के प्रतिशत दोनों ही रूपो में वृद्धि हो गयी है।

पूर्ति-पक्षीय अर्थशास्त्री मानते है कि शीघ्र या देर से अधिकांश कर विशेषतः उत्पादन शुल्क तथा बिक्री कर व्यावसायिक लागतो मे सम्मिलित हो जाते है तथा पदार्थो की अधिक कीमतों के रूप में उपभोक्ताओ पर विवर्तित हो जाते है। इस प्रकार अधिक करारोपण का अधिक मजदूरी के समान ही लागत में वृद्धि करने का प्रभाव होता है।

पूर्ति पक्षधरो का मत है कि कई कर संशाधनो पर व्यय की गयी लागतो तथा पदार्थ के कीमतों के बीच एक wedge का निर्माण करते है। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रयाप्त वृद्धि होने से इसकी वित् व्यवस्था करने के लिए वित् की अव्यश्कता में बहुत अधिक वृद्धि हो गयी है जिनके परिणामस्वरूप कर wedge अधिक हो गया है। इसने समग्र पूर्ति वक्र को बायीं ओर विवर्तित कर दिया है।

Ravi Shankar Raj